लड़की है, गुड़िया नहीं....

वह एक बारिश का दिन था। गोपू अपने घर बिना कुछ काम किए टीवी देखकर बैठा जा रहा था। यह देखकर माँ उसके पास आकर कहीं: "क्या कर रहे हो तुम? टीवी बंद करो और काम में मेरी मदद करो।" "ठीक है" टीवी में ध्यान देते हुए गोपू ने कहा। उसने नहीं हटा। "अब टीवी बंद करो बेटा; जानते हो दुनिया में कितने बच्चे है जो मुश्किलें झेलते है और तुम यहाँ आराम से जी रहे हो।" "तो क्या हुआ; घर के काम लड़कियों का है।" यह सुनकर माँ को बहुत गुस्सा आया और गोपु को मारा। गोपु को बहुत गुस्सा आया "लड़के सोचते है कि लड़कियाँ उनके खिलोने है। लड़के भी घर के काम करते है। अब उठो और बाजार जाओ।" "इस वक्त? बहर बारिश है।" "तो क्या? मुझे बाज़ार से कुछ ज़रूरी सामान चाहिए।" "ठीक है।" गुस्से से गोपू ने छतरी उठाई और लिस्ट लेकर बाजार चलने निकले।

..... "माँ को मेरे बारे में कोई परवा नहीं। अगर इस बारिश में मुझे कुछ हो गया तो ?" माँ की शिकायत करते हुम गोपु चल रहा था। "कोई बच्चा इस बारिश में काम नहीं करेंगे। और तो और यह सब लड़कियों का काम है लड़कों का नहीं।" खुद से कहते समय सड़क के उस पार गोपु ने एक सुंदर लड़की को देखा। वह उसके बगीचे की गुलाब की तरह खूबसूरत थी। बिना छतरी के वह चल रही थी। न जूते थे, न अच्छे कपड़े। उसके गाल पर एक चोट थी जिससे खून निकल रहा था। उस चोट को वह छिपाने की कोशिश कर रही थी। लेकिन गोपु से वह छिपा नहीं पायी। "अरे, यह सुंदर लड़की इस बारिश में क्या कर रही है? शायद इसे मेरी मदद की जरूरत होगी।" गोपु ने सोचा। सड़क के उस पार जाकर उस लड़की के पास गया। लेकिन जब उसने गोपु को देखी तो अपनी चोट छिपाते हुम वह जाने की कोशिश की। "कहा जा रही हो तुम? तुम्हारा नाम क्या है?" गोपु ने पूछा। "गंगी" लड़की की मीठी आवाज सुनकर गोपु को खुशी हुई। "शायद तुम भी

मेरी ही तरह बाजार जा रही हो। हैना?" गोपू ने पूछा। उसने बस हाँ कहकर सिर हिलाया। "तुम्हें चोट कैसे लगी?" यह सुनकर फिर लड़की भागने की कोशिश की, लेकिन गोपू नहीं माना। "अगर तुम्हें कोई परेशानी है तो मुझे बताओ, मैं मदद करूँगा।" यह सुनकर लड़की के आँखें चमकने लगी। "क्या मैं तुम पर विश्वास कर सकती हूँ?" "क्यों नहीं। आज से हम अच्छे दोस्त है।" गोपू ने खुशी से कहा। यह सुनकर गंगी रोने लगी। बारिश की बूँदों से भी तेज़ उसकी आखों से आँसू निकली। "अच्छा, बताओ, तुम्हें चोट कैसी लगी? क्या गिरी थी?" लेकिन उससे जो जवाब आया वह उसने कभी सोचा ही नहीं था। "मैं शायद बस एक गुड़िया हूँ। मेरी न तो माँ है न तो पिता। मैं पिता के भाई के साथ रहती हूँ। बस एक नौकर के जैसे। मुझसे रसोई में एक बर्तन डूँडी। इसलिए मुझे उन्होंने बहुत मारा। वैसे ही मुझे यह चोट लगी।" यह सुनकर गोपू ने पूछा। "क्या? मैं क्या सुन रहा हूँ? तुम्हारी हालत ठीक नहीं है। मैं तुम्हारी मदद करना चाहता हूँ।" "कैसे? इससे

भी ज़्यादा बाते है जो मेरेलिए शरम की बात है।"
"बताओ।" गोपू उसके हाथ पकडकर पक ही छतरी पर
चलने लगे। "तुम मुझे बता सकते हो।" लंडकी काप
रही थी। "मुझे लडकों से नफ़रत है।" "मुझसे भी?"
गोपू दुखी मन से पूछा "आखिर ऐसा क्या है जो तुम्हें
लडकों से नफ़रत करने केलिए मजबूर किया?" "एक
लंबी बात है।" रोती हुई गंगी अपनी दर्द बरी ज़िंदगी
बताई। "पिता के भाई शायद एक राक्षस है। मैं तो
वहाँ के नौकर जैसे मार खाकर जीती हूँ। लेकिन
यह सब मैं सह सकता हूँ पर मेरे शरीर उन्होंने
हाथ रखा तो मैं माफ नहीं दे सकता।" गंगी ज़्यादा
रोने लगी। "उन्होंने मुझे बाजार बेजा सामान लाने",
यह सब सुनकर और उसकी दर्द बरी रोना देखकर गोपू
का आँखें बरा। "ऐसे भी लोग होते है क्या?" "बिलकुल
मैं एक लडकी हूँ गुडिया नहीं हूँ।" उसकी आँखें
आँसुओं से बर कर लाल हो गयी। उसने उस गंगी
की आँखों में दुख-दर्द और दुनिया से नफ़रत देखा।
"हे, भगवान....." गोपू ने उसकी सुंदर आँखों में देखा।
"जब भी मुझे दुखी आती है, मैं गाने लगती हूँ। लेकि-

न जब एक व्यक्ति मेरी शरीर पर बुरी तरह छूआ था तब मैं गाकर अपने दुःख को नष्ट नहीं कर सकी।" यह कहकर वह एक गाना गाने लगी। गंगी की गाना सुनकर गोपू को बहुत अच्छा लगा। पूरे रास्ते में गंगी गाई। सामान खरीदकर दोनों अपने-अपने घर जाने की सोचा तब गोपू ने कहाँ: "कहा जाओगी तुम? उस नरग में?" "और कहाँ?" "तुम मेरे घर आओगी क्या? हम मज़े करेंगे।" "मज़ा शब्द मैं कभी दोहराया नहीं। मैं तो केवल एक गुडिया हूँ जो बुरे लोगों के मज़े केलिए हो।" उसकी आँखों में क्रोध बरी थी। "तुम मेरे साथ चलो।" गोपू ज़िद करके उसे अपने घर ले गया। जब माँ उसकी कहानी सुनी तो हैरान पड़ी। "जो स्त्रीयों के विरुध्द काम करता है, उन्हें सज़ा मिलनी चाहिए। फिर माँ ने गंगी के बारे में पुलिस को बताया।

कुछ दिन बाद आसमान साफ हो गया। गंगी की ज़िंदगी भी साफ हो गई। उसे नीति मिली। कुछ साल बाद एक प्रसिध्द गायिका बदल गई वह। उसकी ज़िंदगी से ही गोपू को पता चल गया कि

~~लड़कियाँ~~ लड़कियाँ नौकर य खिलौना नहीं। अगर लड़कियाँ एक जान को पैदा कर सकती है तो वे दुनिया को भी कुचल सकते है। गंगी की ज़िंदगी गोपु को भी एक अच्छा संदेश दिया। और वह ज़िंदगी भर उस संदेश का पालन किया। माँ की मुश्किलें समझकर माँ का खयाल रखा और गोपु एक अच्छा व्यक्ति ही नहीं एक अच्छा पुरुष तक बना।

लड़कियाँ गुड़िया नहीं है। एक नौकर नहीं है। आज के समाज में हम देखते है कि लड़कियों को गुड़ियों की तरह इस्तेमाल करके खेलते है। वे माँ है, माँ भगवान के रूप है, उनका सम्मान करना चाहिए। लड़कियाँ गुड़िया नहीं जिससे हम खेल सकते है। सबी एक लड़के को हमें यह सिखाना चाहिए कि कैसे एक लड़की से पेश आना चाहिए। स्त्री का सम्मान करना जानते हो तो व्यक्ति अच्छा बन जाता है। माँ की जैसे सम्मान करता है वैसे ही हमें सबी ~~लड़कियाँ~~ लड़कियों का सम्मान करना चाहिए, उनकी मुश्किलें समझना चाहिए। एक अच्छे दुनिया को हमें बनाना चाहिए।